टुसू लागत हिस बेस करत हिस
टुसू के राखके जतने
हामर टुसू बालक आहे
दुख कर मरम जाने निही।
टुसू विदाई के गीत या विसर्जन के गीत -
(घ)तोके टुसु जल में देमु निहीं।
हामर पुराव मन कर कामना।
हाँसी मजाक के टुसू गीत -
(ङ)आइज तो खामु गरम जिलेबी
इ जिलेबी में रस भरल पाबे
नी खाबे तो पाछे पछताबे
हमार मिता दाता दानी।''(3)
आइझ तो खामु गरम जिलेबी
(च)तोर सइकल तो हेंडिल बोका
कोन दोकाने लेले रे बोका
(छ)मुनगा टुसू फुल फुटे
जेमन छोड़ी तें मनक सुर उठे।(3)''[3]

**निष्कर्ष:-**

टुसू पर्व के गीत हास परिहास के गीत होते हैं। इस पर्व में टुसूमणि की तरह ही सुन्दर का वर्णन गीत में भी सौंदर्य का अनोखा चित्रण हुआ है। टुसू पर्व को झारखण्ड में मकर सक्रांति के दिन ही मनाया जाता है। इसी से संबंधित गीत भी गाया जाता है। झारखण्ड प्रदेश में यह एक लोकप्रिय पर्व है। झारखण्ड के सदान आदिवासी दोनों ही समुदाय इस पर्व को बड़ी धुम धाम से मनाते हैं। टुसू की पुजा गीत में पुजा पाठ से संबंधित गीत गाया जाता है। स्वागत गीत भी टुसू की स्वागत के लिए गाया जाता है। उसके बाद टुसू की स्थापना गीत भी अत्यन्त रोचक माना जाता है। उसी प्रकार टुसू की विदाई अर्थात् विसर्जन के गीत भी गाया जाता है। जब टुसू की विसर्जन कर सभी लोग घर वापस लौटते हैं। तो हास परिहास के गीत गाये जाते हैं। ये अश्लील गीत होती है। परन्तु इस समय इससे किसी को तकलीफ नहीं होती है। इस तरह से टुसू पर्व का उत्सव समाप्त हो जाता है। अन्य पर्वों के गीत की भाँति इसके गीत कम पाये जाते हैं।

*******

संदर्भ सूची:-

1.डॉ0 गिरिधारी राम गौंझू ,ऋतु के रंग मांदर संग ,पृ0 सं0-20 ,21 ,प्रिय साहित्य सदन दिल्ली
2.उर्पयुक्त ,पृ0 सं0-18 ,19
3.डॉ0 विघोतमा निधि , नागपुरी लोकगीत ,लोकनृत्य एवं लोकवाद्य ,पृ0 सं0 -238 ,पृथ्वी प्रकाशन नई दिल्ली।

# पारिवारिक संबंधों के बदलते स्वरूप और मालती जोशी की कहानियाँ: एक मूल्यांकन

**डॉ. रेणु सिन्हा**
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
निर्मला कॉलेज, राँची

**अनीता कुमारी**
शोधार्थी
हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

**सारांश-**

प्रस्तुत शोध पत्र में मालती जोशी की कहानियों में चित्रित पारिवारिक संबंधों के बदलते स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। भारतीय समाज में संयुक्त परिवार की परंपरा रही है, जहाँ प्रेम, सहयोग, त्याग और आत्मीयता के सूत्र में सभी सदस्य बंधे रहते थे। परन्तु औद्योगिकीकरण, भौतिकवाद और व्यक्तिवादी दृष्टिकोण के कारण संयुक्त परिवार विघटित होकर एकल परिवारों में परिवर्तित हो गए हैं। इस परिवर्तन के फलस्वरूप पारिवारिक संबंधों में आत्मीयता का ह्रास हुआ है और रिश्तों में कटुता व दूरियाँ बढ़ी हैं।

मालती जोशी ने अपनी कहानियों में परिवार और पारिवारिक संबंधों को केंद्र में रखकर विभिन्न रिश्तों के मधुर और कटु दोनों रूपों का यथार्थ चित्रण किया है। 'संदर्भहीन', 'अक्षम्य', 'प्रतिरोध' जैसी कहानियों में पति-पत्नी के बीच अहं, संदेह और स्वार्थ के कारण उत्पन्न तनाव को दर्शाया गया है। 'उसने नहीं कहा', 'अनहैप्पी बर्थ डे', 'गणित' आदि कहानियों में माता-पिता और संतान के बीच बढ़ती दूरी, भौतिकवादी सोच और स्वार्थपरता को उजागर किया गया है। 'नैहर छूटो जाय', 'हमको दियो परदेश' में भाई-बहन के संबंधों की जटिलता प्रस्तुत की गई है। इसके अतिरिक्त सास-बहू, ननद-भाभी और पीढ़ीगत अंतराल से उत्पन्न संघर्ष का भी सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है।

शोध पत्र इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि मालती जोशी ने अपनी कहानियों के माध्यम से परिवारिक संबंधों के बदलते स्वरूप को उद्घाटित करते हुए यह संदेश दिया है कि पारंपरिक मूल्यों पर आधारित संबंध ही जीवन-मूल्यों की स्थापना में उपयुक्त और आदर्श हैं। उनकी कहानियाँ समकालीन समाज में टूटते रिश्तों की पीड़ा को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती हैं और पारिवारिक संबंधों को बचाए रखने की आवश्यकता पर बल देती हैं।

**बीज शब्द**:-मालती जोशी,पारिवारिक संबंध,संयुक्त परिवार,एकल परिवार,पति-पत्नी संबंध,माता-पिता-संतान,संबंध,भाईबहन,संबंध,सास -बहू संबंध,ननद-भाभी भौतिकवाद,व्यक्तिवाद,जीवन-मूल्य,सामाजिक परिवर्तन,हिन्दी कहानी, संबंध,पीढ़ीगतअंतराल।

**प्रस्तावना-**भारतीय समाज का आधार संयुक्त परिवार रहा है। हमारे पितृसत्तात्मक परिवार के संयुक्त परिवार में सम्पूर्ण उत्तरदायित्व घर के सबसे बड़े पुरुष के कंधे पर होता है। इस परिवार में माता-पिता, भाई, बहन, पति-पत्नी, दादा-दादी, बुआ आदि सभी लोग एक छत के नीचे परस्पर प्रेम एवं सहभागिता के साथ रहते आये हैं। लेकिन औद्योगिकीकरण और आर्थिक विषमताओं के कारण जीवन मूल्यों में इतना ह्रास आया है कि अब संयुक्त परिवार पूरी तरह से विघटित हो गया है और एकल परिवार भी पति-पत्नी के कार्यरत होने तथा बच्चों की शिक्षा आदि कारणों से टूटने को विवश हैं। जहाँ व्यक्ति अपने परिवार द्वारा पहचाना जाता था, आज वहीं परिवार का महत्त्व घटता जा

रहा है और रिश्तों की अहमियत भी कम होती जा रही है। ऐसे में मालती जोशी की कहानियों में एक ओर पारिवारिक संबंधों को बचाए रखने की जद्दोजहद दिखायी देती है तो दूसरी ओर परिवेश के प्रभाववश वे टूटते भी दिखायी देते हैं। अतः मालती जोशी जी की कहानियों में वर्णित पारिवारिक संबंधों के विविध स्वरूप देखने को मिलते हैं।

मालती जोशी जी मूल रूप से परिवार और पारिवारिक संबंधों की कथाकार हैं। इन्होंने अपनी कहानियों में परिवार और पारिवारिक संबंधों को केन्द्र में रखा है। प्रेम, करुणा और सहयोग जहाँ पारिवारिक संबंधों को प्रबल और प्रगाढ़ करती हैं वहीं अपेक्षाएँ, स्वार्थता, असहयोग संबंधों में कड़वाहट पैदा करती है। किसी भी परिवार में पति-पत्नी का संबंध सबसे महत्वपूर्ण होता है। पति-पत्नी के संबंध पर ही परिवार की नींव खड़ी होती है। यह संबंध प्रेम, विश्वास, और भावना पर आधारित होता है, जो परिवार की नींव को सुदृढ़ और सशक्त करता है। लेकिन आज बदलते समय के अनुसार पति-पत्नी दोनों में अहं की भावना इतनी अधिक प्रबल हो चुकी है कि रिश्ते में व्यक्ति एक-दूसरे के सामने झकने को तैयार नहीं है। इसी संदर्भ में मालती जोशी की एक कहानी 'संदर्भहीन' है जिसमें शोभा को उसका पति अपने निज स्वार्थ के लिए सीढ़ी के रूप में उपयोग करता है। जब वह अपने पति का विरोध करती है तब शोभा का पति अन्य तरीके से उससे प्रतिशोध लेता है। वह अपने ही बच्चों के मन में शोभा के प्रति चरित्रहीनता के लांछन का विष घोलता है, जिसके कारण शोभा अपने बच्चों एवं परिवार से पूरी तरह कट जाती है। उसकी मुँह बोली भाभी कुसुम जब शोभा से पूछती हैं कि बच्चे आपका तिरस्कार क्यों करते हैं? तब शोभा कहती है कि "ये उनके पिता की विरासत हैं। मैं जीवन-भर उनसे नफरत करती रही, इसका प्रतिशोध उन्होंने बच्चों के मन में विष के बीज बोकर किया।"[1]

संदेह के कारण भी पति-पत्नी के संबंधों में विघटन आ जाता है। दोनों का जीवन दुखमय हो जाता है। इसी संदर्भ में जोशी जी की कहानी 'अक्षम्य' है जिसमें संदेह के कारण पति-पत्नी का संबंध पूरी तरह से टूट कर बिखर जाता है। श्याम एवं उसकी माँ, बिन्दु को पसंद नहीं करते हैं और इसके साथ ही साथ सास द्वारा बहू बिन्दु के रज्जू हलवाहे के साथ रिश्तों का लांछन लगाया जाता है। जिसके कारण पति-पत्नी के संबंधों में तनाव उत्पन्न हो जाता है। इसी तरह 'प्रतिरोध' कहानी में सुयश और मीरा के बीच संदेह उत्पन्न होने से उनके दाम्पत्य-जीवन में दरार पैदा हो जाता है।

परिवार में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान माता-पिता का होता है और माता-पिता का भी अपनी संतान से विशेष संबंध होता है। परन्तु आज के बदलते परिवेश में माता-पिता और संतान के बीच काफी दूरी बढ़ गई है। जो माता-पिता अपनी संतान के लिए हर कष्ट को सहकर उसकी हर सुख -सुविधा का ख्याल रखते हैं, उन्हीं माता-पिता को बच्चे आज बोझ समझने लगे हैं और इन सबका कारण भौतिकवादी मानसिकता एवं व्यक्तिवादिता का भाव है। इसी संदर्भ में मालती जोशी जी की एक कहानी है 'उसने नहीं कहा' जिसमें पिता अपने बेटे प्रमोद के घर आकर रहने लगते हैं और वहाँ के आस-पास के लोगों से मित्रता भी कर लेते हैं। लेकिन प्रमोद की पत्नी शोभा अपने ससुर द्वारा रोज-रोज घर में उनके मित्रों को चाय-नाश्ता कराने के कारण नाराज होती है। प्रमोद जब अपने पिता से यह कहता है कि आप कैसे जानेंगे कि परेशानी क्या होती है? प्रमोद के इस वाक्य से पिता अवाक् रह जाते हैं और थोड़ी देर के बाद बोलते हैं "मैं जानता हूँ बेटे कि मेरी गृहस्थी एक मामूली से क्लर्क की गृहस्थी थी पर तुम्हारी माँ ने राजा-रईसों की सी शान दे दी थी। साक्षात् लक्ष्मी का रूप थी वह!"[2] यह कथन उनकी दर्द और स्वाभिमान को प्रकट करता है। इसी तरह इनकी एक कहानी 'अनहैप्पी बर्थ डे' है जिसके माध्यम से इन्होंने पिता और बेटे के रिश्ते को पूरी तरह तार-तार होते दिखाया है। जब जिम्मी के बर्थ डे पर उसके माता-पिता एक बड़ा आयोजन करते हैं जिसमें जिम्मी के पिता अपने बॉस को बुलाते हैं और बॉस समारोह में बहुत देर से पहुँचते हैं। जिसके कारण वहाँ आए सभी लोगों को प्रतीक्षा करनी पड़ती है। इस समारोह में जिम्मी भी अपने दोस्त को बुलाता है, जो उसके माली का पोता है। जब जिम्मी के पिता उसे देखते हैं तो क्रोधित होते है और उसे वापस भेज देते हैं, क्योंकि उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं होती। इस कारण जिम्मी बहुत दुःखी होता है। चेतन अपने बॉस को देखकर बहुत खुश होता है, किन्तु जिम्मी उनसे कोई बात नहीं करता, जिसको लेकर चेतन अपने-आप को अपमानित महसूस करता है। चेतन अपनी पत्नी दीपा तथा जिम्मी से कहता है कि- "इससे तो अच्छा था मैं उन सब को बुलाता ही नहीं। कम-से-कम उनकी इनसल्ट तो न होती।"[3] पिता के इस व्यवहार से जिम्मी गुस्सा होता है तब वह पिता से कहता है "पापा आपने भी तो मेरे दोस्तों की इन्सल्ट की है। जिम्मी की बात पूरी होने से पहले ही एक तमाचा उसके गाल पर पड़ जाता है। फिर अनायास ही उसके होठों पर वे शब्द आ जाते हैं जिसकी रिहर्सल बन्ना अंकल के लिए की जा चुकी थी। काँपती आवाज में जिम्मी बोला थैंक्यू पापा! थैंक्यू फॉर द ब्यूटीफुल गिफ्ट। इसका अभिप्राय यह है कि अपने बॉस के आगे अपना इम्प्रेशन जमाने हेतु चेतन अपने बेटे की भावनाओं को समझ नहीं पाता और उसके साथ अन्याय करता है।

जोशी जी की एक कहानी 'गणित' है जिसमें माता-पिता अपने स्वार्थ के कारण अपनी बेटी की शादी विलम्ब से करते हैं। अपने बेटे को डॉक्टर बनाने के लिए उसके माता-पिता सीमा की शादी जब नहीं करते हैं तब उसके मन में बस यही आता है "कितने बसंत आये और चले गये। कितने सावन बरस कर बीत गये, पर उसके मन में कोई कोपल नहीं फूटी।"[5]

आधुनिक युग में स्वार्थ व्यक्ति के भीतर इतना रच बस गया है कि मनुष्य निकलना भी चाहे तो उससे निकल नहीं पाता है। इसके वशीभूत वह अपने आत्मीय रिश्तों को भी भूल जाता है। 'नीड़ का निर्माण फिर-फिर' कहानी में पिंकी अपने पिता तथा उसके परिवार से नफरत करती है, क्योंकि उसके पिता उसे छोड़कर अपना नया घर बसा लेते हैं। "अपने पिता के परिवार से पिंकी को थोड़ा-सा भी लगाव नहीं होता है, बल्कि उन लोगों से भी वितृष्णा सी हो गयी है, जो व्यक्ति अपने बीवी-बच्चों को छोड़कर विदेश चला गया है। यही नहीं वहाँ उसने अपना नया घर भी बसा लिया है- ऐसे व्यक्ति को पिता कहते उसे शर्म आती है और पिता से कोई सरोकार नहीं रहा तो उसकी जायदाद की औकात क्या है। उसे किसी की खैरात नहीं चाहिए। दाल रोटी-मजे से चल रही है- चलती रहेगी।"[6]

इस तरह मालती जोशी जी ने माता-पिता तथा संतान के बीच टूटते संबंधों को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। इसका मुख्य कारण आज के भौतिकवादी युग की स्वार्थपरता दिखायी देती है। हालाँकि संतान ही नहीं बल्कि माता-पिता भी आज स्वार्थी बन गये हैं जिसके कारण 'गणित' कहानी की सीमा की भाँति संतान उनकी स्वार्थ पूर्ति का साधन बन जाती है। भारतीय परिवार में भाई-बहन का संबंध सात्विक और अटूट होता है। इस रिश्ते में विश्वास और स्नेह होता है। यह रिश्ता अनमोल होता है। लेकिन पारिवारिक समस्याओं के कारण इस अनूठे रिश्ते में भी विघटन आ गया है। दोनों में दूरियाँ बढ़ती जा रही हैं। आज के दौर में भाई-बहन अपनी-अपनी गृहस्थी में इतने उलझे हुए हैं कि किसी के पास एक-दूसरे से मिलने का समय तक नहीं रह गया है। यह भी एक मुख्य कारण है जिससे दोनों के बीच प्रेम का अभाव होता जा रहा है। इस संबंध में कहानी 'नैहर छूटो जाय' को देखने से स्पष्ट होता है कि भाई-बहन में पहले तो दूरियाँ बढ़ती हैं परन्तु फिर दोनों अपनी दूरियों को कम करते हुए अपने संबंधों को मजबूत करते हैं। भाई के आमंत्रण पर

बहन घर आती है और अपने बचपन के दिनों को याद करके वह फिर से प्रेम-स्नेह में बँध जाते हैं। अपने पुराने वाले घर जाकर अपने बचपन की यादों को स्मरण करते हैं- "हमलोग जब उस गली से निकले और बाहर आये तो मन बड़ा हल्का हो रहा था, इसलिए नहीं कि पुराने लोग मिल गए बल्कि इसलिए कि उनके माध्यम से हम दोनों भाई-बहन सालों की दीवार चीरकर फिर से एक मन एक प्राण हो सके थे।"[7]

इसी तरह जोशी जी की कहानी 'हमको दियो परदेश' में बड़ी बहन का अपने छोटे भाई के प्रति प्रेम और उत्तरदायित्व की भावना को दर्शाया गया है। माँ के मरणोपरान्त कुसुम अपने छोटे भाई के लिए एक ममतामयी माँ बन जाती है। ढ़ाई-तीन साल के रघु को उसने अपनी छाती से सटाकर रखा और पूरे घर में घोषणा कर दी- "मैं नौकरी करूँगी, रघु को पढ़ाऊँगी। उसे बड़ा आदमी बनाऊँगी, जब तक वह अपने पैरों पर खड़ा नहीं होता मैं विवाह की बात सोच भी नहीं सकती।"[8] कुसुम आगे चलकर अपने भाई को पढ़ा-लिखाकर उसे नौकरी करने लायक बनाती है और उसकी शादी भी करवाती है। परन्तु उसी कुसुम को रघु की शादी हो जाने के बाद उस अपने ही घर में रहना मुश्किल हो जाता है। जिसके कारण उसे प्रौढ़ावस्था में विवाह करना पड़ता है। इस तरह उन दोनों भाई-बहन का मधुर संबंध कटु संबंध में बदल जाता है।

परिवार को बनाने या फिर तोड़ने में सास-बहू की भूमिका को कदापि नकारा नहीं जा सकता। इसीलिए मालती जोशी जी ने अपनी कहानियों में सास-बहू के कटु और मधुर संबंध के दोनों ही रूपों का चित्रण किया है। इनकी कहानी 'फासले' में सास-बहू के संबंधों में, परिस्थितियों में परिवर्तन आने से आपसी मतभेद चलते रहते हैं। अमोल अपनी दादी से कहानी सुनाने की जिद्द करता है, लेकिन वह उसे पुराने विचारों से युक्त अपनी कहानी सुनाती है। जबकि अमोल की मम्मी आधुनिक होने पर उन कहानियों को 'स्टुपिड' की संज्ञा देती है। यदि कहानी बीच में ही बंद हो जाय तो रात में मामा रास्ता भूल जाते हैं। ऐसी बातों से अमोल की मम्मी क्रोधित होकर अमोल को डाँटती है, जिससे सास-बहू के विचारों में भिन्नता दिखायी देती है। अपनी कहानी 'उफान' में भी मालती जोशी जी ने सास-बहू के संबंध को दर्शाया है। माँ अपने बेटे हरीश की शादी बड़े धूम-धाम से करती है। किन्तु अपनी बहू के बारे में कुछ गलत सुनने पर वह उसे शक की निगाह से देखती है तथा उसके पीहर जाने पर उसे याद तक भी नहीं करती और न ही अपने बेटे को बहू लाने को कहती है। उसका बेटा हरीश अपनी माँ से कहता है- "चिन्ता मत करो, अम्मा। जब तक तुम नहीं कहोगी मैं उसे यहाँ नहीं लाऊँगा। तुमने मेरे लिए जिन्दगी में बहुत दुख उठाये हैं। अब यह एक और दुःख, अनचाही बहू के साथ रहने का दुःख मैं तुम्हे नहीं दूँगा।"[9]

परिवार में ननद-भाभी का संबंध भी बहुत प्यारा और अनूठा होता है। ये सहेलियों की तरह आपस में घुलमिलकर रहती है जिससे घर में खुशियों का माहौल बना रहता है। लेकिन इनके संबंध में भी आज कटुता दिखती है। मालती जोशी जी ने ननद और भाभी के मधुर और कटु दोनों संबंधों को ही अपनी कहानियों में दिखाया है। उनकी कहानी 'आउटसाइडर' में ननद-भाभी के संबंध संवेदनशून्य दिखते हैं। भाभी अपनी ननद से लगाव नहीं रखती। जो ननद अपने पूरे परिवार के लिए अपनी जिन्दगी कुर्बान कर देती है, वही ननद परिवार में सिर्फ एक 'आउटसाइडर' के रूप में दिखती है। 'मेहमान' कहानी में ननद-भाभी के प्रेम को बखूबी दिखाने का प्रयास किया गया है। इस कहानी में हेमा को अपनी भाभी से बहुत अधिक प्रेम है। दोनों के मधुर प्रेम को देखकर सभी उनके रिश्ते से ईर्ष्या करते हैं।

मालती जोशी जी ने पीढ़ीगत अंतराल से प्रभावित पारिवारिक संबंध का भी यथार्थ चित्र खींचा है। किस तरह विचारों में भिन्नता, संबंधों में खटास पैदा कर देती है तथा पिता-पुत्र, पुत्र-माँ, सास-बहू आदि के आपसी विचारों में अंतर आने से परिवार में टूटन, विघटन एवं कलह की स्थिति उत्पन्न हो जाती है सबका चित्रांकन मालती जोशी जी ने किया है। 'साथी' कहानी में पिता-पुत्र के विचारों में पूरी तरह से भिन्नता दिखायी देती है। अपने पिता को बैठक के कमरे में देखकर उनकी उपस्थिति परिवेश को अस्वस्थ कर देती है। विशेषकर जब मेहमान आए हों। "बैठक के कमरे में पहुँचते ही बाबूजी दूसरे आदमी बन जाते हैं। हमारे जमाने में से शुरू करके पता नहीं क्या-क्या किस्से सुना डालते थे। कमरे के वातावरण में अजीब-सा तनाव भर जाता था।"[10] लेखिका ने इस कहानी के माध्यम से यह बताना चाहा है कि आज नयी और पुरानी पीढ़ी अपने साथ एडजस्ट नहीं कर पा रही है। इसलिए विचारों की इस भिन्नता ने दोनों पीढ़ियों के बीच संघर्ष खड़ा कर दिया है।

**निष्कर्ष:-**

निष्कर्षतः भारतीय समाज में जिस प्रकार परिजनों में आपसी प्रेम, सहयोग, त्याग, सहिष्णुता एवं आत्मीयता का संबंध होता है जिससे सभी आपस में एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं, बदलते परिवेश के दबाव में व्यक्ति चेतना में कॉफी बदलाव आया है। फलतः परिवारिक संबंधों में आत्मीयता का अभाव पूरी तरह से दिखने लगा है। बदलते युग की आवश्यकता के अनुसार आज संयुक्त परिवार की जगह एकल परिवार ने ले लिया है, जिसका मुख्य कारण व्यक्ति का भौतिकवादी दृष्टिकोण है। मूल्यात्मक बंधनों से मुक्त होकर व्यक्तिवादी होने से वह पुराने संबंधों के मोहपाश से मुक्त होकर आत्मकेंद्रित बनता जा रहा है। संयुक्त परिवार में जहाँ सभी संबंधों में अपनापन और प्रेम था, वहाँ अब बदलते परिवेश में सब कुछ लुप्त हो गया है। संबंधों का बदला हुआ स्वरूप आज एक गंभीर समस्या है।

इस संदर्भ में मालती जोशी जी ने अपनी कहानियों में युग के अनुरूप जहाँ संयुक्त परिवारों के संबंधों को दर्शाया है, वहाँ एकल परिवारों की समस्याओं एवं कुंठाओं को भी अपनी कहानियों में चित्रित किया है। उन्होंने परिवारिक संबंधों के बदलते स्वरूप को उद्घाटित करके यह संकेत दिया है कि हमारे पुराने संबंध ही जीवन-मूल्यों की स्थापना में उपयुक्त एवं आदर्श हैं।

**********

संदर्भ सूची:-

1.जोशी, मालती- ''संदर्भहीन'' (कहानी संग्रह-एक और देवदास) साक्षी प्रकाशन, दिल्ली, 2016, पृष्ठ सं॰ 51
2.जोशी, मालती- ''उसने नहीं कहा'' (कहानी संग्रह-मन ना भये दस-बीस) साक्षी प्रकाशन, दिल्ली-2023, पृष्ठ सं॰ 80
3.जोशी, मालती- ''अन्हैप्पी बर्थ डे'' (कहानी संग्रह-बाबुल का घर) साक्षी प्रकाशन, दिल्ली, 2017, पृष्ठ सं॰ 129
4.वही, पृष्ठ सं॰ 131
5.जोशी, मालती- ''गणित'' (कहानी संग्रह-महकते रिश्ते) साक्षी प्रकाशन, दिल्ली-2012, पृष्ठ सं॰ 32
6.जोशी, मालती- ''नीड़ का निर्माण फिर-फिर'' (कहानी संग्रह-महकते रिश्ते) साक्षी प्रकाशन, दिल्ली, 2012, पृष्ठ सं॰ 15-16
7.जोशी, मालती- ''नैहर छूटो जाय'' (कहानी संग्रह-मन न भये दस-बीस) साक्षी प्रकाशन, दिल्ली, 2023, पृष्ठ सं॰ 38-39
8.जोशी, मालती- ''हमको दियो परदेश'' (कहानी संग्रह-बोल री कठपुतली) किताबघर, प्रकाशन, दिल्ली-1985, पृष्ठ सं॰ 46
9.जोशी, मालती- ''उफान'' (कहानी संग्रह-मन न भये दस-बीस) साक्षी प्रकाशन, दिल्ली, 2023, पृष्ठ 62
10.जोशी, मालती- ''साथी'' (कहानी संग्रह-दर्द का रिश्ता) किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, 1998, पृष्ठ सं॰ 98